यूँ ही नहीं खाटू में | By Abhishek Nama

यूँ ही नहीं ऐसे खाटू में दीनो का मेला लगता है
जग छोड़े जिसे मेरा बाबा उसे पलकों पे बिटाये रखता है

हर सवालों को मिलता जवाब अपना
आँख दर पे संजोती है ख्वाब अपना
शब्दों में श्याम वर्णन ब्यान क्या करूँ
इनकी करुणा तो है कल्पना से परे
अंधकार को भी दर पे आके मिलती रौशनी
हारों बेचारों पे हर दम ही मेरा श्याम निगाहें रखता है
जग छोड़े जिसे मेरा बाबा उसे पलकों पे बिटाये रखता है
यूँ ही नहीं ऐसे खाटू में

न्याय होता ये सच्ची अदालत है
दीनो की श्याम करता हिफाजत है
सच्चे भावों भरी गर इबादत है
पल में दुःख ग़म से मिलती ज़मानत है
आंसुओं को मिलती यहाँ खुशियों से भरी हंसी
सोता नहीं वो नसीबा जो इनकी कृपा से जगता है
जग छोड़े जिसे मेरा बाबा उसे पलकों पे बिटाये रखता है
यूँ ही नहीं ऐसे खाटू में

उसकी उड़ाने क्या कोई रोके
जिसको उड़ाए श्याम के झोंके
जग की ज़रूरत उसको नहीं है
रहता है जो मेरे श्याम का होके
गिरता नहीं फिर से गोलू जो बाबा के हाथों संभलता है
जग छोड़े जिसे मेरा बाबा उसे पलकों पे बिटाये रखता है
यूँ ही नहीं ऐसे खाटू में

<https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%af%e0%a5%82%e0%a4%81-%e0%a4%b9%e0%a5%80-%e0%a4%a8%e0%a4%b9%e0%a5%80%e0%a4%82-%e0%a4%96%e0%a4%be%e0%a4%9f%e0%a5%82-%e0%a4%ae%e0%a5%87%e0%a4%82-by-abhishek-nama/>